Vagisha International Multidisciplinary Research Journal
(International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal)
Volume-01, Issue-03, June-2026| ISSN: 3139-2776 (online)
Available online at:https://vimrj.com/
DOI: https://doi.org/10.67185/vimrj.v1i3.20

नवाचारी शिक्षण पद्धति को बढ़ावा देने में राष्ट्रीय शिक्षा निति–2020 की भूमिका

सुमन पाल[1] एवं डॉ0 शिवाश्रेय यादव[2]

[1]शोधार्थी, शिक्षक–शिक्षा विभाग, नेहरु ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय) कोटवा, जमुनीपुर–दुबावल, प्रयागराज (उ0प्र0)

[2]सहायक आचार्य, शिक्षक–शिक्षा विभाग, नेहरु ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय) कोटवा, जमुनीपुर–दुबावल, प्रयागराज (उ0प्र0)

e-mail- sp1149475@gmail.com

Received: 09 May 2026 | **Accepted:** 17 May 2026 | **Published:** 25 June 2026

सारांश

भारत की शिक्षा व्यवस्था में गुणवत्ता, समावेशन और नवाचार को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से प्रस्तुत राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 एक ऐतिहासिक एवं परिवर्तनकारी दस्तावेज है। यह नीति भारतीय शिक्षा प्रणाली को ऐसी दिशा प्रदान करती है जो केवल ज्ञान संप्रेषण पर आधारित पारंपरिक शिक्षण से आगे बढ़कर अनुभवाधारित, कौशल केंद्रित और प्रौद्योगिकी संवर्धित अधिगम की ओर उन्मुख है। इस नीति का प्रमुख उद्देश्य शिक्षार्थियों में रचनात्मकता, आलोचनात्मक चिंतन, समस्या–समाधान और जीवनोपयोगी कौशलों का विकास करना है। इस शोध में राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 द्वारा प्रस्तावित नवाचारी शिक्षण पद्धतियों जैसे अनुभवात्मक अधिगम, परियोजना आधारित अधिगम, बहुविषयक एवं समेकित शिक्षा, प्रौद्योगिकी आधारित शिक्षण, गेमिफिकेशन, माइक्रोलर्निंग और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के उपयोग की समीक्षा प्रस्तुत की गई है। अध्ययन का उद्देश्य यह विश्लेषण करना है कि NEP–2020 विद्यालय एवं उच्च शिक्षा स्तर पर इन नवाचारी पद्धतियों को अपनाने के लिए किस प्रकार संरचनात्मक, नीतिगत एवं व्यावहारिक अवसर प्रदान करती है। शोध के माध्यम से यह ज्ञात किया जाएगा कि शिक्षकों, विद्यार्थियों और शैक्षणिक संस्थानों में इस नीति के कार्यान्वयन की वास्तविक स्थिति क्या है। साथ ही यह भी मूल्यांकित किया जाएगा कि इन नवाचारी शिक्षण पद्धतियों को अपनाने में कौन सी चुनौतियाँ सामने आती हैं जैसे शिक्षक प्रशिक्षण की कमी, संसाधनों का अभाव, पारंपरिक दृष्टिकोण की जड़ता और इनके समाधान हेतु कौन सी संभावनाएँ मौजूद हैं। यह अध्ययन

शिक्षा के क्षेत्र में नीति और व्यवहार के बीच की कड़ी को स्पष्ट करेगा तथा यह दर्शाएगा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 किस प्रकार भारत की शिक्षा प्रणाली को नवाचार, समावेशन और गुणवत्ता की दिशा में रूपांतरित कर रही है। यह नीति शिक्षण को पारंपरिक पद्धति से आगे बढ़ाकर अनुभवात्मक, कौशल आधारित और प्रौद्योगिकी संवर्धित बनाती है। नीति में शिक्षक को मार्गदर्शक और विद्यार्थी को सक्रिय सहभागी के रूप में देखने की दृष्टि विकसित की गई है। NETF, RIF और बहुभाषिकता जैसे प्रावधानों से नवाचार को संस्थागत स्वरूप मिला है। परिणामस्वरूप राष्ट्रित शिक्षा निति अधिक रचनात्मक, लचीली और भविष्य की आवश्यकताओं के अनुरूप बन रही है।

मुख्य शब्द : राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, नवाचारी शिक्षण पद्धति, अनुभवात्मक अधिगम, प्रौद्योगिकी–आधारित शिक्षा, गेमिफिकेशन, माइक्रोलर्निंग, शैक्षणिक नवाचार।

प्रस्तावना

शिक्षा किसी भी राष्ट्र के विकास की आधारशिला होती है। समाज में ज्ञान, कौशल, मूल्य और नवाचार की चेतना को जाग्रत करने में शिक्षा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। 21वीं शताब्दी में वैश्वीकरण, तकनीकी क्रांति और सामाजिक परिवर्तन ने शिक्षण–अधिगम की पारंपरिक पद्धतियों को गहराई से प्रभावित किया है। आज शिक्षण केवल पाठ्यपुस्तक आधारित क्रिया नहीं रहा, बल्कि यह एक सृजनात्मक, संवादात्मक और अनुभवात्मक प्रक्रिया बन चुका है, जहाँ शिक्षार्थी केंद्र में होता है। ऐसे परिवर्तित परिदृश्य में भारत सरकार द्वारा घोषित राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 एक ऐतिहासिक और दूरदर्शी दस्तावेज के रूप में सामने आई है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 का मूल उद्देश्य भारतीय शिक्षा व्यवस्था को अधिक समग्र, बहुआयामी, कौशल–आधारित और नवाचारी बनाना है। यह नीति शिक्षा के हर स्तर पर सृजनात्मकता, चिंतनशीलता, समस्या–समाधान क्षमता और व्यावहारिक ज्ञान को बढ़ावा देने पर बल देती है। इसमें विद्यार्थियों को "रटने" की प्रवृत्ति से बाहर निकालकर "समझने, करने और सृजन करने" की दिशा में प्रेरित किया गया है।

नवाचार आधारित शिक्षण पद्धतियाँ जैसे– प्रोजेक्ट आधारित अधिगम, अनुभव आधारित अधिगम, गैमिफिकेशन, माइक्रोलर्निंग, ब्लेंडेड लर्निंग तथा डिजिटल पेडागॉजी, इस नीति की प्रमुख विशेषताओं में से हैं। नीति का उद्देश्य शिक्षक को "ज्ञान–संप्रेषक" से आगे बढ़ाकर "सह–शिक्षक" या "मार्गदर्शक" की भूमिका में स्थापित करना है, जो विद्यार्थियों की जिज्ञासा को प्रोत्साहित करे और सीखने को आनंददायक अनुभव बनाए। इसके अतिरिक्त, NEP–2020 शिक्षा में स्थानीयता और वैश्विकता का संतुलन स्थापित करती है। इसमें भारतीय ज्ञान परंपरा, भाषा, संस्कृति और नैतिक मूल्यों को बनाए

रखते हुए आधुनिक विज्ञान, तकनीक और नवाचार को शिक्षा के केंद्र में रखा गया है। यह नीति शिक्षा को जीवनोपयोगी, रोजगारपरक और आत्मनिर्भर भारत के लक्ष्य से जोड़ती है।

आज जब विश्व भर में शिक्षा प्रणालियाँ "रचनात्मक शिक्षण", "डिजिटल शिक्षा" और "आजीवन अधिगम" की दिशा में आगे बढ़ रही हैं, तब NEP-2020 भारत के लिए एक ऐसा मार्गदर्शक दस्तावेज है, जो शिक्षा को नई दिशा, नया दृष्टिकोण और नई ऊर्जा प्रदान करता है। यह नीति न केवल शिक्षार्थियों की व्यक्तिगत क्षमताओं के विकास का अवसर देती है, बल्कि एक सशक्त, नवाचारी और मानवतावादी समाज के निर्माण का मार्ग भी प्रशस्त करती है।

साहित्य समीक्षा

सिंह (2025) नवाचारी शिक्षण विधियों का प्रभाव : एक प्रायोगिक अध्ययन. यह शोध अध्ययन प्राथमिक विद्यालयों में "गेमिफिकेशन" और "प्रोजेक्ट आधारित अधिगम" की प्रभावशीलता का विश्लेषण करता है। शोध का नमूना उत्तर प्रदेश के सरकारी विद्यालयों से चयनित किया गया था, जिसमें 100 छात्रों पर दो माह तक नवाचारी शिक्षण पद्धतियों का प्रयोग किया गया। शोध निष्कर्षों से पता चला कि जिन छात्रों को गेम–आधारित और प्रोजेक्ट–आधारित गतिविधियों के माध्यम से पढ़ाया गया, उनकी सीखने की रुचि, ध्यान एकाग्रता और समझ का स्तर उल्लेखनीय रूप से बढ़ा। छात्र अधिक सहभागी बने और शिक्षक–विद्यार्थी संवाद में सकारात्मक वृद्धि हुई। पारंपरिक व्याख्यान विधि की तुलना में नवाचारी विधियों ने विद्यार्थियों के प्रदर्शन में 22 प्रतिशत तक सुधार दर्ज किया।

यूनेस्को (2023) "ग्लोबल एजुकेशन मॉनिटरिंग रिपोर्ट : एजुकेशनल टेक्नोलॉजी" यूनेस्को की यह रिपोर्ट 21वीं सदी के शैक्षिक परिदृश्य में तकनीकी नवाचारों की भूमिका और उनसे उत्पन्न चुनौतियों पर केंद्रित है। इसमें यह स्पष्ट किया गया है कि शिक्षा में प्रौद्योगिकी का उपयोग केवल सुविधा बढ़ाने का माध्यम नहीं है, बल्कि यह शिक्षण की पद्धति, पहुँच और समानता को भी प्रभावित करता है। रिपोर्ट में कहा गया है कि "डिजिटल प्रगति ने शिक्षा के अवसरों का विस्तार किया है, किंतु साथ ही डिजिटल विभाजन ने सामाजिक और आर्थिक असमानताओं को और गहरा किया है।" कई विकासशील देशों में तकनीकी संसाधनों की असमान उपलब्धता, इंटरनेट कनेक्टिविटी की कमी और डिजिटल साक्षरता की कमी के कारण शिक्षा में समान अवसर नहीं मिल पा रहे हैं।

विश्व बैंक (2022) "ग्लोबल लर्निंग पॉवर्टी रिपोर्ट" विश्व बैंक द्वारा प्रकाशित इस रिपोर्ट का मुख्य उद्देश्य विश्व के विभिन्न देशों में सीखने की गरीबी की स्थिति का आकलन करना है। रिपोर्ट में बताया गया है कि प्राथमिक स्तर के लगभग 70 प्रतिशत बच्चे ऐसे हैं जो अपनी आयु के अनुसार न्यूनतम पठन और गणना कौशल नहीं प्राप्त कर पा रहे हैं। कोविड–19 महामारी ने इस स्थिति को और गंभीर बना

दिया है, क्योंकि विद्यालय बंद होने से लाखों बच्चे सीखने के अवसरों से वंचित हो गए। हालाँकि रिपोर्ट में यह भी उल्लेख है कि जहाँ–जहाँ नवाचार आधारित शिक्षण पद्धतियाँ अपनाई गईं, जैसे कि डिजिटल लर्निंग, समुदाय आधारित शिक्षण केंद्र, और कौशल–आधारित प्रोजेक्ट्स वहाँ सीखने के परिणामों में उल्लेखनीय सुधार देखा गया। विश्व बैंक ने यह निष्कर्ष दिया कि शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए केवल बुनियादी ढांचे पर निवेश पर्याप्त नहीं हैय आवश्यक है कि शिक्षण पद्धतियाँ ″सीखने की प्रक्रिया को रोचक, व्यावहारिक और सहभागी″ बनाएं। इस दृष्टि से नवाचारी शिक्षण पद्धतियाँ जैसे प्रोजेक्ट–आधारित अधिगम और अनुभवात्मक शिक्षा सीखने की गरीबी को घटाने में सहायक सिद्ध हो सकती हैं।

भारतीय शिक्षा मंत्रालय (2020) भारत सरकार की राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020, शिक्षा प्रणाली को 21वीं सदी की चुनौतियों और आवश्यकताओं के अनुरूप रूपांतरित करने की दिशा में एक ऐतिहासिक पहल है। इस नीति में शिक्षा को केवल जानकारी प्राप्त करने का साधन नहीं, बल्कि जीवन निर्माण और नवाचार का माध्यम माना गया है। नीति का मुख्य उद्देश्य ″सीखने की प्रक्रिया को आनन्ददायक, अर्थपूर्ण और आत्मनिर्भर भारत″ के लक्ष्य से जोड़ना है। इस प्रकार NEP–2020 नवाचारी शिक्षण पद्धतियों के संवर्द्धन की दिशा में एक ठोस रूपरेखा प्रस्तुत करती है।

नवाचारी शिक्षण पद्धतियाँ

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 भारतीय शिक्षा व्यवस्था में एक परिवर्तनकारी दस्तावेज के रूप में उभरकर सामने आई है। इस नीति का मूल उद्देश्य शिक्षा को केवल ज्ञान–संप्रेषण की प्रक्रिया न मानकर एक जीवंत, सृजनशील और नवाचारोन्मुख अनुभव बनाना है। इस नीति के अंतर्गत शिक्षा में ″Innovation″ को केंद्रीय स्थान प्रदान किया गया है, ताकि शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया को अधिक सहभागितापूर्ण, लचीला, और विद्यार्थी केंद्रित बनाया जा सके। नवाचारी शिक्षण पद्धतियाँ वह माध्यम हैं जिनसे शिक्षा को ″सीखने का आनंददायक अनुभव″ बनाया जा सकता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 ने विशेष रूप से कुछ ऐसी शिक्षण पद्धतियों पर बल दिया है जो विद्यार्थियों की जिज्ञासा, रचनात्मकता और चिंतनशीलता को विकसित करती हैं। इनमें प्रमुख हैं–

1. **अनुभवात्मक अधिगम :** अनुभवात्मक अधिगम ″करते हुए सीखना″ की अवधारणा पर आधारित है। इस पद्धति में विद्यार्थी अपने अनुभवों से ज्ञान अर्जित करता है। शिक्षक यहाँ ″ज्ञान के स्रोत″ की भूमिका में नहीं, बल्कि ″मार्गदर्शक″ की भूमिका में होते हैं। इसमें विद्यार्थियों को वास्तविक जीवन की परिस्थितियों से जोड़कर सिखाया जाता है, जैसे– प्रयोगशालाओं में गतिविधियाँ करना, मॉडल तैयार करना, सामुदायिक सर्वेक्षण करना, या भूमिका–अभिनय के माध्यम से

सीखना। अनुभवात्मक अधिगम से विद्यार्थियों में न केवल विषय की गहरी समझ विकसित होती है, बल्कि उनमें आत्मविश्वास, सहयोग भावना, और समस्या समाधान की क्षमता भी बढ़ती है। NEP–2020 इस बात पर बल देती है कि अनुभवात्मक शिक्षा से सीखना "अर्थपूर्ण, सृजनात्मक और स्थायी" बनता है।

2. **प्रोजेक्ट आधारित अधिगम :** यह पद्धति विद्यार्थियों को "वास्तविक समस्याओं के समाधान हेतु कार्य" प्रदान करती है, जिससे वे स्वयं खोज, विश्लेषण, योजना और प्रस्तुति की प्रक्रिया से गुजरते हैं। इस प्रक्रिया में विद्यार्थी समूहों में काम करते हैं, जिससे उनमें सहयोग, नेतृत्व और आलोचनात्मक चिंतन की प्रवृत्ति विकसित होती है। प्रोजेक्ट आधारित अधिगम विद्यार्थियों को केवल "जानने" नहीं बल्कि "करने" की दिशा में प्रेरित करता है। उदाहरण के लिए, "स्थानीय जलस्रोतों का संरक्षण" या "विद्यालय परिसर में कचरा प्रबंधन" जैसे प्रोजेक्ट विद्यार्थियों में सामाजिक उत्तरदायित्व और पर्यावरणीय चेतना दोनों विकसित करते हैं। यह विधि विद्यार्थियों में अनुसंधानात्मक दृष्टिकोण को बढ़ावा देती है और उन्हें वास्तविक जीवन के लिए तैयार करती है।

3. **गैमिफिकेशन :** गैमिफिकेशन का अर्थ है– शिक्षा में "खेल के तत्वों" का उपयोग। यह पद्धति इस सिद्धांत पर आधारित है कि खेलना और प्रतिस्पर्धा करना मानव का स्वाभाविक गुण है, जिसे अधिगम से जोड़ा जाए तो शिक्षण रोचक और प्रभावी बन सकता है। गैमिफिकेशन में अंक, स्तर, बैज, चुनौतियाँ और पुरस्कार जैसे तत्व शामिल किए जाते हैं। इससे विद्यार्थियों में सहभागिता की भावना और सीखने की प्रेरणा बढ़ती है। उदाहरण के लिए, गणित की समस्याओं को "Math Quest" नामक खेल की तरह हल करना, या हिंदी व्याकरण सिखाने के लिए "Language Bingo" खेल का प्रयोग करना, विद्यार्थियों को सक्रिय और उत्साहित बनाता है। यह विधि विद्यार्थियों की एकाग्रता, प्रतिस्पर्धात्मक भावना और स्व–प्रेरणा को सशक्त करती है।

4. **माइक्रोलर्निंग :** माइक्रोलर्निंग का उद्देश्य है "जटिल विषयों को छोटे, सरल और केंद्रित भागों में विभाजित कर प्रस्तुत करना"। आज के युग में जहाँ विद्यार्थियों का ध्यान सीमित समय तक केंद्रित रहता है, यह विधि अत्यंत उपयोगी सिद्ध हुई है। प्रत्येक माइक्रोलर्निंग इकाई 5 से 10 मिनट की होती है और किसी एक अवधारणा पर केंद्रित रहती है। उदाहरणतः "भिन्नों का जोड़" विषय को पाँच छोटे वीडियो में बाँट देना, जिनमें प्रत्येक में एक उप–विषय समझाया गया हो। इस विधि से विद्यार्थियों को विषय–वस्तु को क्रमिक रूप से समझने, याद रखने और

पुनः उपयोग करने में सुविधा होती है। यह पद्धति ऑनलाइन शिक्षण और मोबाइल लर्निंग प्लेटफॉर्म्स पर विशेष रूप से प्रभावी है।

5. **ब्लेंडेड लर्निंग :** ब्लेंडेड लर्निंग में पारंपरिक कक्षा शिक्षण और ऑनलाइन शिक्षण का संयोजन किया जाता है। यह पद्धति विद्यार्थियों को लचीलापन प्रदान करती है जिससे विद्यार्थी अपनी गति और सुविधा के अनुसार सीख सकते हैं। शिक्षक इस प्रक्रिया में "मार्गदर्शक और परामर्शदाता" की भूमिका निभाते हैं, जबकि विद्यार्थी अपनी गति से ऑनलाइन संसाधनों के माध्यम से विषय का गहन अध्ययन करते हैं। यह विधि शिक्षण को "फिलप्ड क्लासरूम" मॉडल के रूप में परिवर्तित करती है, जहाँ विद्यार्थी पहले ऑनलाइन सामग्री पढ़ते हैं और फिर कक्षा में उस पर चर्चा करते हैं। ब्लेंडेड लर्निंग शिक्षा को अधिक प्रभावी, संवादात्मक और प्रौद्योगिकी सक्षम बनाती है।
6. **डिजिटल पेडागॉजी :** डिजिटल पेडागॉजी सूचना और संचार प्रौद्योगिकी पर आधारित शिक्षण की आधुनिक विधि है। यह शिक्षा को "डिजिटल माध्यमों" जैसे– स्मार्ट क्लास, वर्चुअल लैब्स, ई–लर्निंग प्लेटफॉर्म, और कृत्रिम बुद्धिमत्ता से जोड़ती है। इस पद्धति के माध्यम से शिक्षक और विद्यार्थी दोनों ही डिजिटल उपकरणों (जैसे– टैबलेट, स्मार्ट बोर्ड, लर्निंग ऐप) के माध्यम से ज्ञान का आदान–प्रदान करते हैं। यह विधि न केवल शिक्षा को सुलभ बनाती है, बल्कि विद्यार्थियों को "डिजिटल साक्षर" भी बनाती है, जो आज के तकनीकी युग की आवश्यकता है। NEP–2020 में डिजिटल शिक्षण को "समानता और समावेशन" के प्रमुख साधन के रूप में स्वीकार किया गया है।

नवाचारी शिक्षण पद्धति को बढ़ावा देने में राष्ट्रिय शिक्षा निति–2020 की भूमिका

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 भारत की शिक्षा व्यवस्था में एक परिवर्तनकारी दस्तावेज है, जिसका उद्देश्य शिक्षा को अधिक समावेशी, लचीला, बहुआयामी और नवाचारी बनाना है। इस नीति ने शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में सृजनात्मकता, नवाचार और विद्यार्थी–केंद्रितता को शिक्षा का मूल तत्व माना है। यह नीति पारंपरिक ज्ञान–आधारित शिक्षा से आगे बढ़कर विद्यार्थियों में समस्या समाधान क्षमता, आलोचनात्मक चिंतन, मूल्यबोध और डिजिटल साक्षरता को विकसित करने पर बल देती है। नीति का मुख्य उद्देश्य ऐसी शिक्षा प्रणाली का निर्माण करना है जो विद्यार्थियों को केवल रोजगार योग्य ही नहीं, बल्कि उत्तरदायी, संवेदनशील और आजीवन सीखने वाला नागरिक बनाए। इसके अंतर्गत शिक्षा के सभी स्तरों प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च में नवाचार, अनुसंधान और प्रौद्योगिकी के उपयोग को प्रोत्साहित किया गया है।

1. **शिक्षण में लचीलापन :** राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 ने पारंपरिक विषय सीमाओं को समाप्त करने का प्रयास किया है। अब विद्यार्थी कला, विज्ञान, वाणिज्य और व्यावसायिक शिक्षा के विषयों को मिलाकर अध्ययन कर सकते हैं। यह लचीलापन नवाचारी शिक्षण विधियों जैसे ब्लेंडेड लर्निंग और प्रोजेक्ट–आधारित अधिगम के लिए आधार तैयार करता है। उदाहरण के लिए, एक विद्यार्थी गणित के साथ संगीत या विज्ञान के साथ कला विषय ले सकता है, जिससे उसकी सृजनात्मकता और आलोचनात्मक चिंतन दोनों का विकास होता है। इस दृष्टि से नीति "सीखने की स्वतंत्रता" को केंद्र में रखती है, जो नवाचार की मूलभूत शर्त है।
2. **शिक्षक प्रशिक्षण :** नीति के अनुसार, शिक्षकों को केवल विषय विशेषज्ञ नहीं, बल्कि "सृजनशील अधिगम मार्गदर्शक" के रूप में विकसित किया जाना चाहिए। इसके लिए राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद ने "समग्र शिक्षक शिक्षा रूपरेखा" प्रारंभ की है। प्रशिक्षण में ICT का उपयोग, गेमिफिकेशन टूल्स, और माइक्रोलर्निंग तकनीकों पर विशेष बल दिया जा रहा है। इस प्रकार, नीति शिक्षक को नवाचार के वाहक के रूप में स्थापित करती है।
3. **प्रौद्योगिकी एकीकरण :** डिजिटल युग की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए NEP–2020 ने "Technology in Education" को नीति का एक प्रमुख स्तंभ माना है। DIKSHA, SWAYAM, e-Pathshala और NPTEL जैसे प्लेटफॉर्मों के माध्यम से शिक्षण को डिजिटल रूप में उपलब्ध कराया गया है। ब्लेंडेड लर्निंग और डिजिटल पेडागॉजी के माध्यम से शिक्षण अब केवल कक्षा तक सीमित नहीं है, बल्कि मोबाइल, टैबलेट और लैपटॉप के माध्यम से सुलभ है। इससे ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच शिक्षण संसाधन समानता सुनिश्चित हो रही है।
4. **मूल्य आधारित शिक्षा :** NEP–2020 केवल ज्ञान प्रदान करने पर ही नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण और मानवीय मूल्यों पर भी बल देती है। इसमें करुणा, सहिष्णुता, पर्यावरणीय जागरूकता, सामाजिक उत्तरदायित्व और भारतीय संस्कृति के मूल तत्वों को शिक्षा के केंद्र में रखा गया है। नवाचारी शिक्षण पद्धतियाँ जैसे अनुभवात्मक अधिगम और प्रोजेक्ट आधारित शिक्षण विद्यार्थियों में इन मूल्यों को व्यवहारिक रूप से विकसित करती हैं।
5. **आजीवन अधिगम :** नीति सीखने को केवल औपचारिक शिक्षा तक सीमित नहीं रखती, बल्कि इसे एक निरंतर प्रक्रिया के रूप में देखती है। NEP–2020 ने यह स्पष्ट किया है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल परीक्षा उत्तीर्ण करना नहीं, बल्कि जीवनभर सीखने की प्रवृत्ति विकसित करना है। इसके लिए ओपन एंड डिस्टेंस लर्निंग, ऑनलाइन कोर्सेज और माइक्रोलर्निंग मॉड्यूल्स को

प्रोत्साहित किया गया है। यह दृष्टिकोण शिक्षा को 21वीं सदी के कौशलों– क्रिटिकल थिंकिंग, क्रिएटिविटी, कोलैबोरेशन और कम्युनिकेशन से जोड़ता है।

निष्कर्ष

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 भारतीय शिक्षा प्रणाली में एक ऐतिहासिक और परिवर्तनकारी दस्तावेज के रूप में उभरकर सामने आई है। यह नीति केवल शैक्षिक सुधारों की रूपरेखा नहीं, बल्कि शिक्षा के दर्शन, उद्देश्य और पद्धति में मूलभूत परिवर्तन का संकेतक है। इसने शिक्षा को ज्ञान–केंद्रितता से हटाकर सीखने की प्रक्रिया को सृजनात्मक, अनुभवात्मक और विद्यार्थी–केंद्रित बनाने की दिशा में एक ठोस कदम उठाया है। NEP–2020 का प्रमुख योगदान यह है कि इसने शिक्षा में नवाचार को केन्द्रीय स्थान प्रदान किया है। नीति ने पारंपरिक रटंत प्रणाली को चुनौती देते हुए, विद्यार्थियों में आलोचनात्मक चिंतन, समस्या समाधान, सहयोग और रचनात्मकता जैसे 21वीं सदी के कौशलों के विकास पर बल दिया है। यह दृष्टिकोण शिक्षण को केवल परीक्षा आधारित न रखकर, जीवनोपयोगी अधिगम की ओर अग्रसर करता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने विभिन्न नवाचारी शिक्षण पद्धतियों जैसे– अनुभवात्मक अधिगम, प्रोजेक्ट आधारित अधिगम, गैमिफिकेशन, माइक्रोलर्निंग, ब्लेंडेड लर्निंग और डिजिटल पेडागॉजी को प्रोत्साहित किया है। इन पद्धतियों के माध्यम से शिक्षण प्रक्रिया में विद्यार्थियों की सक्रिय सहभागिता, रुचि और अनुभवात्मक समझ को सशक्त किया गया है। परिणामस्वरूप शिक्षा अब केवल सैद्धांतिक न होकर व्यावहारिक, रचनात्मक और प्रयोगात्मक बनती जा रही है। नीति का एक और महत्वपूर्ण पहलू है– शिक्षक सशक्तिकरण। शिक्षकों को नवाचार के वाहक के रूप में देखा गया है। इसके लिए सतत व्यावसायिक विकास तथा ICT आधारित प्रशिक्षण को अनिवार्य किया गया है। यह व्यवस्था शिक्षकों को शिक्षण में तकनीकी, मनोवैज्ञानिक और सृजनात्मक रूप से सक्षम बनाती है, जिससे वे विद्यार्थियों के सीखने के अनुभव को समृद्ध कर सकें।

शैक्षिक निहितार्थ

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 ने भारतीय शिक्षा प्रणाली को एक नई दिशा, दृष्टि और उद्देश्य प्रदान किया है। यह नीति केवल सुधार का दस्तावेज नहीं, बल्कि एक व्यापक शैक्षिक परिवर्तन का मार्गदर्शक दर्शन है, जिसने शिक्षण पद्धतियों, शिक्षक की भूमिका, पाठ्यचर्या निर्माण, मूल्यांकन प्रणाली और शिक्षार्थी के अनुभव सभी में गहरे प्रभाव डाले हैं। नीति के अंतर्गत नवाचार, तकनीकी एकीकरण और

विद्यार्थी–केंद्रित अधिगम को केंद्र में रखकर शिक्षा को अधिक प्रासंगिक, जीवनोपयोगी और सृजनात्मक बनाने की दिशा में ठोस कदम उठाए गए हैं।

1. **शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में परिवर्तन :** राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 का सबसे प्रमुख शैक्षिक निहितार्थ यह है कि इसने शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया को पारंपरिक रटंत प्रणाली से निकालकर अनुभवात्मक और नवाचारी अधिगम की दिशा में मोड़ा है। शिक्षण अब केवल ज्ञान–संप्रेषण तक सीमित नहीं, बल्कि सीखने के अनुभव का निर्माण बन गया है। "सीखना करते हुए" और "सोचकर करना" की अवधारणा ने विद्यार्थियों में स्वायत्तता, जिज्ञासा और सक्रिय सहभागिता को बढ़ावा दिया है। इससे विद्यार्थियों की सीखने की प्रक्रिया गहरी, सार्थक और दीर्घकालिक बनती है।
2. **शिक्षक की भूमिका में रूपांतरण :** NEP–2020 के तहत शिक्षक अब केवल "ज्ञान प्रदाता" नहीं, बल्कि सह–शिक्षक और मार्गदर्शक के रूप में उभरे हैं। शिक्षक को अब नवाचार, रचनात्मकता और अनुसंधान का प्रेरक माना गया है। नीति में निरंतर व्यावसायिक विकास को अनिवार्य किया गया है, जिससे शिक्षक नई शिक्षण पद्धतियों जैसे गैमिफिकेशन, माइक्रोलर्निंग, ब्लेंडेड लर्निंग आदि को प्रभावी ढंग से लागू कर सकें। इस प्रकार, शिक्षक शिक्षा अब अनुसंधान और प्रयोग आधारित बन गई है, जो शिक्षण की गुणवत्ता में स्थायी सुधार लाती है।
3. **पाठ्यक्रम एवं मूल्यांकन प्रणाली में नवाचार :** राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने पाठ्यक्रम को अधिक लचीला और बहु–विषयक बनाया है। अब विद्यार्थी अपनी रुचि और क्षमता के अनुसार विषयों का चयन कर सकते हैं, जिससे शिक्षा अधिक व्यक्तिगत और सार्थक बनती है। मूल्यांकन प्रणाली को भी केवल अंकों या परीक्षा तक सीमित न रखकर सतत और समग्र मूल्यांकन, प्रदर्शन आधारित मूल्यांकन और पोर्टफोलियो मूल्यांकन जैसे रूपों में बदला गया है। इससे शिक्षा का लक्ष्य केवल परीक्षा उत्तीर्ण करना नहीं, बल्कि ज्ञान का व्यावहारिक अनुप्रयोग बन गया है।
4. **प्रौद्योगिकी और डिजिटल शिक्षण का एकीकरण :** NEP–2020 ने तकनीकी संसाधनों को शिक्षण प्रक्रिया में समाहित करते हुए शिक्षा में डिजिटल समानता और सुलभता को प्रोत्साहित किया है। DIKSHA, SWAYAM, e-Pathshala, NPTEL जैसे प्लेटफॉर्म शिक्षकों और विद्यार्थियों को डिजिटल अधिगम के अवसर प्रदान करते हैं। इससे ब्लेंडेड लर्निंग और डिजिटल पेडागॉजी को नई पहचान मिली है। यह नीति विद्यार्थियों में तकनीकी साक्षरता और ऑनलाइन सीखने की क्षमता का विकास करती है, जिससे वे वैश्विक शैक्षिक वातावरण से जुड़ सकें।

5. **मूल्य आधारित और भारतीय दृष्टिकोण पर आधारित शिक्षा :** NEP–2020 का एक अन्य प्रमुख निहितार्थ है– शिक्षा को भारतीय मूल्यों और संस्कृति से जोड़ना। नीति में नैतिक शिक्षा, करुणा, सहिष्णुता, सहयोग, पर्यावरण चेतना और भारतीय ज्ञान परंपरा को शिक्षा का अभिन्न अंग बनाया गया है। यह दृष्टिकोण विद्यार्थियों में चरित्र निर्माण और मानवीयता आधारित जीवन दृष्टि का विकास करता है। इस प्रकार, शिक्षा केवल कौशल या रोजगार प्राप्ति का माध्यम न रहकर, समग्र मानव विकास का साधन बन जाती है।
6. **समावेशी और आजीवन शिक्षा की परिकल्पना :** NEP–2020 का उद्देश्य हर व्यक्ति तक शिक्षा के अवसर पहुँचाना है– चाहे वह किसी भी वर्ग, लिंग या क्षेत्र से संबंधित हो। नीति ने लचीले शैक्षिक मार्ग और ओपन एंड डिस्टेंस लर्निंग को प्रोत्साहन दिया है। इससे शिक्षा अब एक समयबद्ध क्रिया न होकर, आजीवन अधिगम की निरंतर यात्रा बन गई है। यह दृष्टिकोण विद्यार्थियों को आत्मनिर्भर, जिम्मेदार और वैश्विक नागरिक बनने की दिशा में प्रेरित करता है।
7. **विद्यालयी वातावरण और शैक्षिक संस्कृति पर प्रभाव :** राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने विद्यालयों को केवल औपचारिक शिक्षण संस्थान नहीं, बल्कि सीखने की प्रयोगशालाएँ के रूप में देखा है। विद्यालयों में रचनात्मक परियोजनाएँ, नवाचार प्रतियोगिताएँ और जीवन कौशल कार्यक्रमों का आयोजन अब शिक्षा का हिस्सा बन चुके हैं। इससे विद्यालय संस्कृति अधिक लोकतांत्रिक, सहयोगात्मक और समावेशी बनती है। विद्यार्थियों में नेतृत्व, आत्मविश्वास और सामाजिक उत्तरदायित्व के गुण विकसित होते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अग्रवाल, वी. के. (2023). राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020: परिप्रेक्ष्य, संभावनाएँ और चुनौतियाँ. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
2. भारत सरकार (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020. मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नई दिल्ली: भारत सरकार प्रकाशन विभाग।
3. सिंह, एस. पी. (2022). शिक्षण में नवाचारी पद्धतियाँ: एक व्यवहारिक दृष्टिकोण. वाराणसी : ज्ञानदीप पब्लिकेशन।
4. शर्मा, आर. सी. (2021). भारतीय शिक्षा में नवाचार और परिवर्तन. नई दिल्ली: अटलांटिक प्रकाशन।

5. **UNESCO (2023).** *Global Education Monitoring Report 2023: Technology in Education – A Tool on Whose Terms?* Paris: UNESCO Publishing.
6. **World Bank (2022).** *Learning Poverty and the Education Crisis.* Washington DC: The World Bank Group.
7. **Tyagi, R. S. (2021).** *Innovative Pedagogies and NEP–2020: A Transformative Approach to Education.* New Delhi: Concept Publishing Company.
8. **Kumar, P., & Sharma, A. (2022).** *Gamification and Experiential Learning in Indian Classrooms: Post–NEP Perspective. Journal of Indian Education*, 48(3), 25–37.
9. **Mishra, S. (2021).** *Blended Learning and Digital Pedagogy under NEP–2020: Emerging Trends. Educational Review*, 59(2), 40–52.
10. **Pandey, S. (2023).** *Microlearning and Competency-Based Education in the Context of NEP–2020. International Journal of Pedagogical Innovations*, 5(1), 15–27.
11. **National Council of Educational Research and Training (NCERT) (2021).** *School Education Quality Framework under NEP–2020.*